प्लेटो के विचार में क्रिया या गतिविधि आधारित बाल-केंद्रित शिक्षा

प्लेटो ने अपने शैक्षिक उद्देश्यों के अनुरूप ही पाठ्यक्रम की अवधारणा रखते हैं जिसमें बच्चों के लिए कविता, गणित, खेलकूद, कसरत, सैनिक-प्रशिक्षण, शिष्टाचार तथा धर्मशास्त्र की शिक्षा दिए जाने की आवश्यकता को व्यक्त करते हैं। वह बच्चों के लिए खेल-कूद को अत्यंत आवश्यक मानते हैं किन्तु इसका लक्ष्य प्रतियोगिता को जीतना न होकर स्वस्थ शरीर तथा मनोरंजन की प्राप्ति के रूप में स्वीकार करते हैं। इनका मानना था कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क एवं आत्मा का निवास सम्भव है। वह अपनी शिक्षा व्यवस्था मे कसरत (जिमनास्टक) एवं नृत्य को अधिक प्राथमिकता देते हैं और इसके समन्वय का आग्रह करते हैं। इनका मानना था कि कसरत विहीन संगीतज्ञ कायर होता है और संगीत विहीन कसरती पहलवान आक्रामक पशु के समान

Scanned with CamScanner

होता है। इसी कारण वह इन दोनों को युद्धकाल एवं शांतिकाल दोनों ही परिस्थितियों में अत्यंत उपयोगी मानते हैं।

प्लेटो का यह मानना था कि बच्चों को शारीरिक प्रशिक्षण एवं कसरत (व्यायाम) के विषय में उनके बचपन से ही सिखाया जाना चाहिए। इनका मानना था कि शारीरिक शिक्षा की भांति बच्चो का सांस्कृतिक प्रशिक्षण भी छोटी अवस्था से ही आरम्भ कर देना चाहिए। अभिभावक कहानी के माध्यम से बच्चों को अपनी सभ्यता एवं संस्कृति के विषय में परिचित करा सकते हैं लेकिन इसके लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि उन्हें वही कहानियां सुनाई जानी चाहिए जो उनकी उम्र एवं मानसिक परिपक्वता स्तर के लिए उपयुक्त हो। कहानियों के अतिरिक्त खेल को भी प्लेटो बच्चो के चरित्र विकास मे सहायक मानते है। इसलिए उनका मानना था कि एक पूर्ण विकसीत मानव के रूप में जो भी शिक्षा या ज्ञान आवश्यक है, उसकी शिक्षा उसको बचपन से ही खेलों, क्रियाओं

एवं गतिविधियों के माध्यम से प्रदान किया जाना चाहिए। प्लेटो खेलों या क्रियाओं या गतिविधियों की योजना इस प्रकार से करने का सुझाव देते हैं कि बच्चे को उसकी रुचि, योग्यता एवं क्षमता के अनुकूल विकास करने में सहायक हो।

'खोज' की संभावनाएँ —

प्लेटो के आदर्श राज्य में 'शिक्षा' व्यक्तियों को सामाजिक हैसियत प्राप्त करने का अवसर प्रदान करती है। शिक्षा समाज को वर्गीकृत करने का साधन है। उनके आदर्श राज्य मे कोई जन्म से कोई भी स्तर प्राप्त कर सकता है। शिक्षा के द्वारा इस बात का पता लगाया जा सकता है कि कौन सा व्यक्ति कौन सा कार्य के लिए उपयुक्त है। वह मानते थे कि शिक्षा का प्राथमिक कार्य व्यक्ति के स्वाभाविक गुणों से परिचय कराना है, उसके बाद उसको वही कार्य दिया जाना चाहिए जो उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। इस स्वतंत्रता से

हम खोज के संदर्भ में रेखांकित कर सकते हैं।

'Republic' पुस्तक के अलावा 'लॉज' नामक पुस्तक में वह क्रीड़ा (खेल) को महत्व देते हैं। एक अर्थ में शिक्षा प्रक्रिया के दौरान सभी व्यक्तियों की सावधानीपूर्वक देखभाल की जानी चाहिए और अनेक विधियों से उनकी जाँच और परीक्षण होते रहना चाहिए